Jadoo Ke Bare Mein Malumaat (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 314
Weekly Booklet : 314

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "नेकी की दा'वत" की
एक क़िस्त बनाम

जादू

के बारे में मा'लूमात

सफ़हात 21

- मैं आग के अन्दर 20 मिनट खड़ा रहा 03
- गुनाह मिटाने का नुस्ख़ा 12
- नेक बन्दों की शानें 18

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	:	**जादू के बारे में मा'लूमात**
सिने त़बाअ़त	:	मुह़र्रमुल ह़राम **1445** हि., अगस्त **2023** ई.
ता'दाद	:	000
नाशिर	:	**मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

जादू के बारे में मा'लूमात

येह रिसाला **(जादू के बारे में मा'लूमात)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद -1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून "नेकी की दा'वत" के सफ़ह़ा 467 ता 483 से लिया गया है।

जादू के बारे में मा'लूमात

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़ह़ात का रिसाला **"जादू के बारे में मा'लूमात"** पढ़ या सुन ले उसे जादू और शरीर जिन्नात के असरात और नज़रे बद से मह़फ़ूज़ फ़रमा और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारी दुआ़ओं का मुह़ाफ़िज़, रब्बे करीम की रिज़ा का बाइ़स और तुम्हारे आ'माल की पाकीज़गी का सबब है। (القول البدیع، ص270)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

आइये ! सुन्नतें आ़म करने का जज़्बा बढ़ाने के लिये एक **मदनी बहार** सुनते हैं।

तीन शराबी भाई मदनी माह़ोल में आ गए !

एक इस्लामी भाई के ख़ानदान का शुमार वहां के अमीर तरीन घरानों में होता था मगर अफ़्सोस कि उन के होश संभालने से पहले ही उन के बड़े भाई बुरे दोस्तों की सोह़बत की वज्ह से **शराब** के आ़दी बन चुके

थे। बुरी सोह़बत और शराब नोशी की वज्ह से भाई ने उन की ता'लीम व तरबियत पर कोई तवज्जोह न दी, नशे के इ़लावा उन्हें किसी चीज़ से कोई सरोकार ही न था। आहिस्ता आहिस्ता नशे की लत ने उन्हें घर का सामान फ़रोख़्त करने पर मजबूर कर दिया ह़त्ता कि उन्हों ने कपड़े की दुकान, फ़ैक्टरी और एक पूरी मार्केट जिस में कई दुकानें थीं नशे की आग में झोंक दीं, घर में लगी आग से भला घर वाले कैसे बच सकते थे ! आख़िर वोही हुवा जिस का डर था या'नी उन से छोटा और इन से बड़ा भाई भी **मुनश्शिय्यात** का आ़दी हो गया, इस आग ने और ज़ोर पकड़ा तो वोह भी इस की लपेट में आ ही गए और उन्हें भी नशे की आ़दत पड़ गई। वालिदए मोह़तरमा जो कि पहले ही बड़े भाई के नशई होने की वज्ह से सदमे से निढाल थीं, येह भाई ग़म में मज़ीद इज़ाफ़े का बाइ़स बन गए। आख़िरे कार उन के नसीब कुछ यूं जागे कि उन का मंझला (या'नी दरमियाना) भाई जो कि नशे की आफ़त से मह़फ़ूज़ था वोह आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके मुश्कबार दीनी माह़ोल में आने जाने लगा, दीनी माह़ोल से वाबस्तगी की बरकत से कभी कभार उन पर भी **इन्फ़िरादी कोशिश** के ज़रीए़ इज्तिमाअ़ में ले जाने में काम्याब हो जाता, लेकिन वहां उन का दिल नहीं लगता था मगर भाई ने इन्फ़िरादी कोशिश जारी रखी और उन्हें **मह़ब्बत** के साथ इज्तिमाअ़ में ले जाता रहा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه अपने भाई की इन्फ़िरादी कोशिशों की बरकत से आज वोह सब भाई जो कि कुछ अ़र्सा क़ब्ल नशे के आ़दी थे तौबा कर के दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो चुके हैं। उन को जब कभी अपना साबिक़ा दौर याद आता है तो दिल कांप जाता है कि अगर दा'वते इस्लामी का दीनी माह़ोल न मिलता

तो क्या बनता ? शायद येही होता कि वोह आज दर दर की ठोकरें खा रहे होते और उन्हें अपने भी धुत्कार रहे होते, मगर اَلْحَمْدُ لِلّٰه दीनी माहोल के तुफ़ैल उन के ख़ज़ां रसीदा गुलज़ार में फिर से ख़ुशियों की मदनी बहार आ गई ! **अल्लाह** पाक के करोड़हा करोड़ एहसान कि वोह ता दमे तहरीर 63 दिन का मदनी कोर्स कर रहे हैं और सब से बड़े भाईजान कमो बेश 17 माह से **आशिक़ाने रसूल** के हमराह सुन्नतें सीखने सिखाने के मदनी क़ाफ़िले के मुसाफ़िर हैं।

दा'वते इस्लामी की क़य्यूम दोनों जहां में मच जाए धूम
इस पे फ़िदा हो बच्चा बच्चा या अल्लाह मेरी झोली भर दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 109)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

इस मदनी बहार के ज़िम्न में नेकी की दा'वत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाई ! देखा आप ने ! इन्फ़िरादी कोशिश के ज़रीए सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की बरकत से तीन शराबी भाई दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता हो गए। शराबी की ख़राबी आप ने मुलाहज़ा फ़रमाई कि उस ने कारख़ाना, कपड़े की दुकान और अपनी मार्केट सब कुछ "नशे" की आग में झोंक दिया ! वाक़ेई शराब बड़ी ख़राब शै है और इस से दुन्या व आख़िरत दोनों ही दाव पर लग जाते हैं। शराब इस क़दर बुरी बला है कि येह दवाअन भी नहीं पी जा सकती चुनान्चे हज़रते तारिक़ बिन सुवैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने शराब के मुतअल्लिक़ सुवाल किया, हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मन्अ फ़रमाया : उन्हों ने अर्ज़ की : हम तो उसे दवा के लिये बनाते हैं। फ़रमाया : "येह दवा नहीं है, येह तो ख़ुद बीमारी

है।" (مسلم، ص1097،حدیث:1984) ह़ज़रते अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इब्रत निशान है : "तीन शख़्स जन्नत में दाख़िल न होंगे। शराब की मुदावमत करने (या'नी हमेशा पीने) वाला और क़ातेए़ रेह़्म (या'नी रिश्तेदारी तोड़ने वाला) और जादू की तस्दीक़ करने वाला।" (مسند امام احمد،7/139،حدیث:19586)

जादू के बारे में

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इस ह़दीसे पाक के इस हिस्से "और जादू की तस्दीक़ करने वाला" के तह़त फ़रमाते हैं : इस से मुराद वोह शख़्स है जो **जादू** की तासीर बि ज़ातिही (या'नी इस में **अल्लाह** के दिये बिग़ैर ख़ुद ब ख़ुद तासीर होने) का क़ाइल हो।

(مر قاۃ المفاتیح،7/242،تحت الحدیث:3656)

जादू और जिन्न के वुजूद का इन्कार कुफ़्र है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाई ! "**जादू**" का वुजूद क़ुरआने करीम से साबित है लिहाज़ा इस त़रह़ का ए'तिक़ाद रखना कि "जादू" का वुजूद ही नहीं बस यूं ही लोगों की बातें हैं, येह कुफ़्र है। इसी त़रह़ **जिन्न** के वुजूद का इन्कार भी कुफ़्र है।

मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की तश्वीश

ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हम ने दुन्या की **मह़ब्बत** पर आपस में सुल्ह़ कर ली, लिहाज़ा अब हम आपस में **नेकी का हुक्म** देते हैं और न ही एक दूसरे को बुराइयों से मन्अ़ करते हैं, **अल्लाह** पाक हमें इस ह़ाल पर न रखे वरना न जाने हम पर कौन सा अ़ज़ाब नाज़िल किया जाए ! (شعب الایمان،6/97،حدیث:7596)

आतश परस्त पड़ोसी मुसल्मान हो गया

प्यारे प्यारे इस्लामी भाई ! ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه सदियों पुराने बुज़ुर्ग हैं। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने दौर की ह़ालत बयान कर के अ़ज़ाब की तश्वीश का इज़्हार फ़रमाया जब कि अब तो ह़ालात बे इन्तिहा **अब्तर** हो चुके हैं। सद करोड़ अफ़्सोस ! अब तो मुसल्मानों की भारी अक्सरिय्यत एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर दुन्या की शैदाई हो चुकी है और ह़ालात इतने ख़राब हो चुके हैं कि किसी को नेकी की दा'वत देना कुजा ! नेकी की दा'वत देने वाले की बा ज़ाबिता मुख़ालफ़त की जाने लगी है और बुराई से किसी को मन्अ़ करना तो बहुत दूर रहा ! अब तो ख़ूब ख़ूब बुराई की दा'वत पेश की जाती है। आह ! न अपनी इस्लाह़ की फ़िक्र है न घरबार की सुधार की परवाह है और न ही पड़ोसियों की आख़िरत बेहतर बनाने की सोच है। बहर ह़ाल हमें चाहिये कि हम ख़ुद सुधरने की सई के साथ साथ दीगर इस्लामी भाइयों को भी नेकी की दा'वत पेश करें नीज़ अपने पड़ोसियों पर भी इन्फ़िरादी कोशिश किया करें। اَلْحَمْدُلِلّٰه हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم के अपने पड़ोसियों पर **इन्फ़िरादी कोशिश** के कई वाक़िआ़त हैं, चुनान्चे शम्ऊ़न नामी एक आतश परस्त ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का पड़ोसी था। जब उस के इन्तिक़ाल का वक़्त क़रीब आया तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه उस के पास तशरीफ़ ले गए, क्या देखते हैं कि उस का सारा जिस्म आग के धुएं की वज्ह से सियाह पड़ गया है ! आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उसे इस्लाम क़बूल करने की **दा'वत** पेश की और रह़मते इलाही की उम्मीद दिलाई। उस ने अ़र्ज़ की, कि मैं तीन चीज़ों की वज्ह से इस्लाम से दूर हूं : ﴾1﴿ जब इस्लाम के नज़्दीक "दुन्या" बहुत

बुरी शै है तो फिर तुम लोग इस के हुसूल की **जुस्तजू** क्यूं करते हो ? ﴾2﴿ मौत को यक़ीनी तसव्वुर करने के बा वुजूद उस के लिये **तय्यारी** क्यूं नहीं करते ? ﴾3﴿ तुम्हारे कहने के मुताबिक़ दीदारे इलाही बहुत बड़ी ने'मत है तो फिर तुम दुन्या में उस की **मरज़ी के ख़िलाफ़** काम क्यूं करते हो ? ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : "इन सब चीज़ों का तअ़ल्लुक़ तो आ'माल से है अ़क़ाइद से नहीं, तुम येह तो ग़ौर करो कि आतश परस्ती में वक़्त **ज़ाएअ़** कर के तुम्हें ह़ासिल क्या हुवा ? मोमिन ख़्वाह जैसा भी हो कम अज़ कम **अल्लाह** पाक की वह़दानिय्यत (या'नी एक होने) को तो तस्लीम करता है। देखो ! तुम ने 70 साल तक इस आग को पूजा है इस के बा वुजूद हम दोनों अगर आग में कूदें तो येह हम दोनों को यक्सां या'नी बराबर जलाएगी यक़ीनन तुम्हारा इस की इ़बादत करना तुम्हें नहीं बचा सकेगा, हां मेरे मालिक व मौला में ज़रूर येह **ताक़त** है कि अगर वोह चाहे तो येह आग मुझे ज़र्रा बराबर नुक़्सान न पहुंचा सके।" येह फ़रमा कर आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने हाथ में आग उठा ली लेकिन उस ने आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को कोई नुक़्सान न पहुंचाया। येह देख कर शम्ऊ़न बड़ा **मुतअस्सिर** हुवा मगर उदास हो कर कहने लगा : "मैं सत्तर साल आतश परस्ती में मुब्तला रहा, अब आख़िरी वक़्त में क्या मुसल्मान होउंगा।" आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उस पर इन्फ़िरादी कोशिश जारी रखी, आख़िरे कार उस ने अर्ज़ की : "मैं इस शर्त पर मुसल्मान हो सकता हूं कि आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه मुझे येह अ़ह्द नामा लिख कर दें कि मेरे मुसल्मान हो जाने के बा'द **अल्लाह** पाक मेरे तमाम गुनाहों की बख़्शिश फ़रमा देगा।" आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उसी मज़्मून का अ़ह्द नामा लिख कर उस के ह़वाले कर दिया, लेकिन उस ने

कहा : "इस पर आ़दिल लोगों की गवाही भी दर्ज करवाइये।" आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उस का येह मुत़ालबा भी पूरा कर दिया। इस के बा'द वोह मुसल्मान हो गया और **वसिय्यत** की, कि मेरे मरने के बा'द मुझे आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ख़ुद ग़ुस्ल दे कर येह "अ़ह्द नामा" मेरे हाथ में थमा दीजियेगा ताकि मैदाने महशर में मेरे मोमिन होने का सुबूत बन सके। येह वसिय्यत करने के बा'द उस ने कलिमए शहादत पढ़ा और उस की रूह़ क़फ़से उ़न्सुरी से परवाज़ कर गई। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने उस की वसिय्यत पूरी फ़रमाई। उसी शब आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ख़्वाब में देखा कि वोह बहुत क़ीमती लिबास और नक़्शो निगार से मुज़य्यन ताज पहने जन्नत की सैर में मस्रूफ़ है। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने पूछा : तुझ पर क्या गुज़री ? उस ने अ़र्ज़ की "ख़ुदाए पाक ने मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी और मुझे ऐसे ऐसे इन्आ़मात से नवाज़ा कि मैं बता नहीं सकता, लिहाज़ा ! अब आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه पर कोई बार (या'नी बोझ) नहीं और येह "अ़ह्द नामा" वापस ले लीजिये क्यूं कि अब मुझे इस की ह़ाजत नहीं।" जब बेदार हुए तो वोह अ़ह्द नामा आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के हाथ में मौजूद था। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इस काम्याबी पर **अल्लाह** पाक का शुक्र अदा किया। (تذکرۃ الاولیاء، 1/41) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

ज़माने भर में मचा देंगे धूम सुन्नत की अगर करम ने तेरे साथ दे दिया या रब

(वसाइले बख़्शिश, स. 95)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मैं आग के अन्दर पूरे 20 मिनट खड़ा रहा !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह वालों की भी क्या ख़ूब

बुलन्दो बाला शानें हुवा करती हैं कि वोह **नेकी की दा'वत** भी देते हैं, **अल्लाह** पाक की इ़नायत से करामात भी दिखाते हैं और ईमान की ने'मत दिला कर जन्नत में दाख़िले की सूरत भी बना देते हैं। बहर ह़ाल पड़ोसी की भी फ़िक्र रखनी चाहिये और उसे नेकी की दा'वत से मह़रूम नहीं करना चाहिये। ह़याते आ'ला ह़ज़रत जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 183 ता 184 पर वारिद एक ईमान अफ़रोज़ ह़िकायत पढ़िये, जिस में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बे मिसाल तक़्वे का भी तज़्किरा है, ह़िकायत को क़दरे आसान कर के पेश करने की कोशिश करता हूं चुनान्चे ह़ज़रते मौलाना हुसैन मेरठी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ह़ज़रत पीर अ़ब्दुल ह़मीद साह़िब बग़दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हिन्द के सूबे गुजरात के एक शहर बड़ोदा में तशरीफ़ लाए और जामेअ़ मस्जिद में एक दिन मग़रिब की नमाज़ पढ़ाई, मैं ने ऐसा असर कभी क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने का नहीं देखा, मा'लूमात कर के इन से मिलने इन की क़ियाम गाह पर गया। ए'जाज़े क़ुरआनी के सिल्सिले में पीर साह़िब ने अपना एक ईमान अफ़रोज़ वाक़िआ़ सुनाते हुए फ़रमाया : मैं एक मर्तबा "ईरान" गया, वहां के एक पुराने आतश कदे से तअ़ल्लुक़ रखने वाले आतश परस्तों से मुनाज़रे की मेरी तरकीब बनी। मैं ने कह दिया कि जिस आग की तुम लोग पूजा करते हो उसी के अन्दर जा कर पूछ लिया जाए कि आया वोह अपने पूजने वालों की कोई रिआ़यत भी करती है या उस को भी जला मारती है ! मेरी इस बात को वोह लोग मज़ाक़ समझे, मगर एक वक़्त तै़ कर लिया गया। वक़्ते मुक़र्ररा पर सारा शहर येह "अनोखा मुनाज़रा" देखने के लिये उमंड आया। मैं ने उन के पुजारी से कहा : चलिये आग के अन्दर ! वोह घबरा गया। اَلْحَمْدُ لِلّٰه मैं आतश कदे के अन्दर दाख़िल हो गया

और शो'ले मारती आग के अन्दर पूरे 20 मिनट खड़ा रहा, फिर ब ख़ैरो आ़फ़िय्यत बाहर निकल आया । येह मन्ज़र देख कर اَلْحَمْدُلِلّٰه बहुत सारे आतश परस्त तौबा कर के मुशर्रफ़ ब इस्लाम हो गए। ह़ज़रत मौलाना हुसैन मेरठी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने पूछा : आप ने इतनी हिम्मत कैसे की ? फ़रमाया : आग में दाख़िल होते वक़्त मैं ने क़ुरआने करीम हाथ में उठा रखा था और मेरा येह ज़ेह्न बना हुवा था कि जब क़ुरआने पाक हमें जहन्नम की आग से बचा सकता है तो दुन्या की मा'मूली आग से क्यूं नहीं बचा सकता ! उन बुज़ुर्ग से मैं ने सरकारे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ एक मख़्सूस एह़तियात़ का तज़्किरा किया तो वोह बेह़द मुतअस्सिर हुए, दूसरे दिन मेरी उन से फिर मुलाक़ात हुई तो फ़रमाया : आज सारी रात रोते गुज़री येही कहता रहा कि ख़ुदा वन्दा ! तेरे ऐसे बन्दे भी हैं जो इस क़दर एह़तियात़ से नमाज़ पढ़ते हैं ।

(ह़याते आ'ला ह़ज़रत, स. 183, 184, बि तग़य्युर)

अल्लाह क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा रो रो के मुस्त़फ़ा ने दरिया बहा दिये हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 102)

शर्ह़े कलामे रज़ा : इस शे'र में **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार के दरबारे गोहर बार में अ़र्ज़ गुज़ार हैं : **या अल्लाह** पाक ! क्या जहन्नम की आग ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा के ह़क़ में अब भी सर्द न होगी ! मेरे प्यारे प्यारे परवर दगार तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत की बख़्शिश के लिये दुआ़एं करते हुए इतना रोए हैं इतना रोए हैं गोया रो रो कर दरिया बहा दिये हैं ।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मशामे जां मुअ़त्तर हो गए

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अपने दिल के अन्दर महब्बते औलियाए किराम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِم की शम्अ़ जलाने, फ़ैज़ाने औलिया पाने और दुन्या व आख़िरत बेहतर बनाने के लिये दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये, आप का जज़्बए शौक़ बढ़ाने के लिये एक मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं चुनान्चे एक इस्लामी भाई के तहरीरी बयान का ख़ुलासा पेशे ख़िदमत है : दा'वते इस्लामी के महके महके मुश्कबार दीनी माहोल से वाबस्तगी से क़ब्ल गुनाहों भरी ज़िन्दगी बसर हो रही थी, उन की ज़िन्दगी के ख़ज़ां रसीदा चमन में नसीमे बहार कुछ इस त़रह़ चली कि एक दिन ह़स्बे मा'मूल वोह अपने मेडीकल स्टोर पर मौजूद थे, एक इस्लामी भाई उन के पास तशरीफ़ लाए और इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन्हों ने इन को सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की दा'वत पेश की मगर मैं ने उन की बात सुनी अनसुनी कर दी। इस्लाह़े उम्मत के जज़्बे से सरशार, उस आ़शिक़े रसूल के ह़ौसले पस्त होने के बजाए गोया मज़ीद बुलन्द हो गए ! उन्हों ने इन्फ़िरादी कोशिश बराबर जारी रखी, اَلْحَمْدُلِلّٰه वोह उन की महब्बत और मुस्तक़िल इन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत के लिये तय्यार हो गया। जब वोह इज्तिमाअ़ गाह की पुरनूर फ़ज़ाओं में पहुंचा तो आ़शिक़ाने रसूल का ठाठें मारता समुन्दर देख कर बेह़द मुतअस्सिर हुवा। तिलावते क़ुरआने पाक, सुन्नतों भरे बयानात, पुरसोज़ ना'तें और ज़िक्रुल्लाह की कैफ़ आवर सदाएं मशामे जां को मुअ़त्तर और जिस्म व रूह़ को मुसल्सल ताज़गी बख़्श रही थीं, उन्हों ने गुज़श्ता गुनाहों से तौबा की और हाथों हाथ दाढ़ी सजाने की निय्यत कर ली और

दा'वते इस्लामी के तह़्त राहे ख़ुदा में सुन्नतें सीखने सिखाने के लिये सफ़र करने वाले आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िले के हमराह सफ़र करने का ज़ेह्न भी बना लिया। اَلْحَمْدُلِلّٰه दा'वते इस्लामी के महके महके मुश्कबार दीनी माह़ोल से वाबस्तगी की बरकत से गुनहगार को नेकियों से मह़ब्बत और गुनाहों से नफ़रत का अ़ज़ीम जज़्बा नसीब हो गया।

हैं इस्लामी भाई सभी भाई भाई है बेह़द मह़ब्बत भरा दीनी माह़ोल
यक़ीनन मुक़द्दर का वोह है सिकन्दर जिसे ख़ैर से मिल गया दीनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 602)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मदनी बहार के ज़िम्न में "नेकी" के मुतअ़ल्लिक़ नेकी की दा'वत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! इस्लामी भाई की इन्फ़िरादी कोशिश पर इस्तिक़ामत आख़िरे कार रंग लाई और गुनाहों भरी ज़िन्दगी गुज़ारने वाला नौ जवान सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में आ गया और आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत व बरकत ने गुनहगार को नेकोकार बना दिया, उसे दाढ़ी बढ़ाने, नेकियां अपनाने और गुनाहों से पीछा छुड़ाने का जज़्बा मिल गया। वाक़ेई "नेकियां" करना बड़ी सआ़दत की बात है। नेकी गुनाह मिटाती अ़ज़ाबे क़ब्र व जहन्नम से बचाती और जन्नत दिलाती है। दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, "**कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इरफ़ान**" सफ़ह़ा 438 पर पारह 12 सूरए हूद आयत नम्बर 114 में **अल्लाह** पाक का इर्शादे बिशारत बुन्याद है :

اِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक नेकियां बुराइयों को मिटा देती हैं।

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ जहां भी रहो **अल्लाह** पाक से डरते रहो और गुनाह के बा'द नेकी कर लिया करो कि वोह नेकी उस गुनाह को मिटा देगी और लोगों के साथ हुस्ने अख़्लाक़ से पेश आओ। (ترمذی، 3/397، حدیث:1994) ﴾2﴿ बेशक गुनाह के बा'द नेकी करने वाले की मिसाल उस शख़्स की त़रह़ है जिस की तंग ज़िरह ने उस का गला घोंट दिया हो फिर वोह नेक अ़मल करे तो उस ज़िरह का एक ह़ल्क़ा खुल जाए फिर जब वोह दूसरी नेकी करे तो उस का दूसरा ह़ल्क़ा भी खुल जाए यहां तक कि वोह ज़िरह ज़मीन पर गिर जाए।

(مسند امام احمد، 6/121، حدیث:17309)

गुनाह मिटाने का नुस्ख़ा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! आयते मुबारका और 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से मा'लूम हुवा कि जब भी गुनाह सरज़द हो जाए तो कोई नेकी कर लेनी चाहिये मसलन दुरूद शरीफ़, कलिमए त़य्यिबा वग़ैरा पढ़ ले। चुनान्चे ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मुझे नसीह़त करते हुए मदीने के सुल्त़ान صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जब भी तुझ से कोई बुरा अ़मल सरज़द हो जाए, तो उस के बा'द कोई नेक काम कर ले कि येह नेकी उस बुराई को मिटा देगी। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या **لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ** कहना नेकियों में से है ? फ़रमाया : येह तो अफ़्ज़ल तरीन नेकी है।

(مسند امام احمد، 8/113، حدیث:21543)

तौबा के इरादे से गुनाह करना कुफ़्र है

येह ह़दीसे पाक पढ़ कर **مَعَاذَ اللّٰه** कोई येह न समझे कि बहुत ज़बर दस्त नुस्ख़ा हाथ आ गया ! अब तो ख़ूब गुनाह करते रहेंगे और **لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ**

कह लिया करेंगे तो गुनाह मिट जाएंगे। ख़ुदा की क़सम ! येह शैत़ान का बहुत बड़ा और बुरा वार है। इस इरादे से गुनाह करना कि बा'द में तौबा कर लूंगा येह अशद कबीरा या'नी सख़्त तरीन कबीरा गुनाह है। बल्कि ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ नूरुल इरफ़ान सफ़ह़ा 376 पर सूरए यूसुफ़ की आयत नम्बर 9 के तह़्त फ़रमाते हैं : "तौबा के इरादे से गुनाह करना कुफ़्र है।"

ब वक़्ते नज़्अ़ सलामत रहे मेरा ईमां मुझे नसीब हो कलिमा है इल्तिजा या रब
जो "दीनी काम" करें दिल लगा के या अल्लाह उन्हें हो ख़्वाब में दीदारे मुस्त़फ़ा या रब
तेरी मह़ब्बत उतर जाए मेरी नस नस में पए रज़ा हो अ़त़ा इश्क़े मुस्त़फ़ा या रब

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

पड़ोसी को बुराई से न रोकने का वबाल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! पड़ोसियों के बहुत सारे हुक़ूक़ हैं, इन की बजा आवरी के लिये हमें हर दम कोशां रहना चाहिये। पड़ोसियों को सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत और मदनी क़ाफ़िले में सुन्नतों भरे सफ़र वग़ैरा की दा'वत देने में भी ग़फ़्लत नहीं बरतनी चाहिये नीज़ उन को مَعَاذَاللّٰہ गुनाहों में मुब्तला देखें तो उन्हें उन से बाज़ रखने के लिये भी भरपूर सई करनी चाहिये। ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحۡمَۃُاللّٰہِعَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं ने तौरात शरीफ़ में पढ़ा कि जिस का पड़ोसी ना फ़रमानी में मुब्तला हो और वोह उसे न रोके तो वोह भी इस गुनाह में शरीक है। (الزہد للامام احمد، ص134، رقم:527)

पड़ोसी क़ियामत के दिन दा'वा करेगा

पड़ोसी को नेकी की दा'वत देने और गुनाहों से मुमानअ़त करने की अहम्मिय्यत बहुत ज़ियादा है जैसा कि अब जो रिवायत पेश की जा रही है

उस से ज़ाहिर है चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हम ने येह बात सुनी है कि क़ियामत के दिन एक शख़्स दूसरे के ख़िलाफ़ दा'वा करेगा ह़ालां कि वोह उस को जानता न होगा। मुद्दआ अ़लैह (या'नी जिस पर दा'वा किया गया) कहेगा : तेरा मुझ पर क्या ह़क़ है ? मैं तो तुझ को (सह़ीह़ से) जानता तक भी नहीं। मुद्दई (या'नी दा'वा करने वाला) कहेगा : तू मुझ को गुनाह करते देखता था और मुझे मन्अ़ नहीं करता था। (الترغیب والترہیب، 3/186، حدیث:3546)

बे नमाज़ी पड़ोसी को नमाज़ की दा'वत दीजिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा दोनों रिवायतों से मा'लूम हुवा कि पड़ोसियों को भी ज़रूर नेकी की दा'वत देनी और बुराई में मुमानअ़त करनी चाहिये, आप का पड़ोसी अगर बे नमाज़ी है तो उसे नमाज़ की दा'वत दीजिये, अगर वोह नमाज़ी है और जमाअ़त में सुस्ती करता है तो उसे जमाअ़त की तल्क़ीन कीजिये ह़त्ता कि अगर आप का ज़न्ने ग़ालिब है कि समझाएंगे तो जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना शुरूअ़ कर देगा तो अब उसे समझाना वाजिब हो गया, नहीं समझाएंगे तो गुनहगार होंगे चुनान्चे दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब "बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल" सफ़ह़ा 582 पर है : आ़क़िल, बालिग़, ह़ुर (या'नी आज़ाद), क़ादिर (या'नी क़ुदरत रखने वाले) पर जमाअ़त वाजिब है, बिला उ़ज़्र एक बार भी छोड़ने वाला गुनहगार और मुस्तह़िक़े सज़ा है और कई बार तर्क करे तो फ़ासिक़ मरदूदुश्शहादह (या'नी उस की गवाही क़ाबिले रद है) और उस को सख़्त सज़ा दी जाएगी, अगर पड़ोसियों ने सुकूत किया (या'नी ख़ामोशी इख़्तियार की) तो वोह भी गुनहगार हुए।

(در مختار و رد المحتار، 2/340۔ غنیہ، ص508)

इमाम को चाहिये कि मुक़्तदी की निगरानी करे

मस्जिदों के पेश इमामों की ख़िदमतों में मश्वरतन अ़र्ज़ है वोह अपने मुक़्तदियों की निगरानी किया करें कि उन में से कौन जमाअ़त से नमाज़ पढ़ता है और कौन नहीं, अगर कोई नमाज़ी किसी नमाज़ में ग़ैर हाज़िर हो तो उस के घर जा कर या फ़ोन कर के उस की ख़बर निकालें, बीमार हो गया हो तो इ़यादत करें और सुस्ती की वज्ह से न आया हो तो **नेकी की दा'वत** दें और येह सिर्फ़ इमाम साहिबान ही के लिये नहीं है तमाम इस्लामी भाइयों को येह अन्दाज़ इख़्तियार करना चाहिये।

फ़ारूक़े आ'ज़म ने फ़ज्र में ग़ैर हाज़िर रहने वाले की मा'लूमात की

अमीरुल मुअमिनीन, मुसल्मानों के दूसरे ख़लीफ़ा, ह़ज़रते उ़मरे फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के नमाज़ियों की ख़बरगीरी करने की एक रिवायत मुलाह़ज़ा फ़रमाइये और इस के मुत़ाबिक़ अ़मल का ज़ेह्न बनाइये चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने सुब्ह़ की नमाज़ में ह़ज़रते सुलैमान बिन अबी ह़स्मा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ को नहीं देखा। बाज़ार तशरीफ़ ले गए, रास्ते में ह़ज़रते सुलैमान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का घर था उन की मां ह़ज़रते शिफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि सुब्ह़ की नमाज़ में, मैं ने सुलैमान को नहीं पाया! उन्हों ने कहा : रात में नमाज़ (या'नी नफ़्लें) पढ़ते रहे फिर नींद आ गई, उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : सुब्ह़ की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ूं येह मेरे नज़्दीक इस से बेहतर है कि रात में क़ियाम करूं। (या'नी रात भर नफ़्लें पढ़ूं) (موطا امام مالک، 1/134، حدیث:300)

महफ़िले ना'त वग़ैरा के सबब जमाअ़त नहीं जानी चाहिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! उ़मर फ़ारूके़ आ'ज़म رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने घर जा कर ख़बर निकाली, इस रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि शब भर नवाफ़िल पढ़ने या महफ़िले ना'त में रात गए तक शिर्कत करने के सबब सुब्ह़ की नमाज़ क़ज़ा हो जाना कुजा अगर फ़ज्र की जमाअ़त भी चली जाती हो तो लाज़िम है कि इस त़रह़ के मुस्तह़ब्बात छोड़ कर रात आराम कर ले और बा जमाअ़त नमाज़े फ़ज्र अदा करे।

नमाज़ के वक़्त सो जाने वाले के लिये सर कुचलने का अ़ज़ाब

जो लोग रातों को बैठकें जमाते और ख़ूब मह़फ़िलें चमकाते हैं और फ़ज्र की नमाज़ से क़ब्ल सो जाते और नमाज़ से ख़ुद को मह़रूम कर देते हैं उन के लिये लम्ह़ए फ़िक्रिय्या है। चुनान्चे **सरकारे मदीनए मुनव्वरह,** सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सहाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان से फ़रमाया : आज रात दो शख़्स (या'नी जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام और मीकाईल عَلَیْہِ السَّلَام) मेरे पास आए और मुझे अर्ज़े मुक़द्दसा में ले आए। मैं ने देखा कि **एक शख़्स** लेटा है और उस के सिरहाने एक शख़्स पथ्थर उठाए खड़ा है और पै दर पै पथ्थर से उस का सर कुचल रहा है, हर बार कुचलने के बा'द सर फिर ठीक हो जाता है। मैं ने फ़िरिश्तों से कहा : سُبْحٰنَ اللہ येह कौन है ? उन्हों ने अ़र्ज़ की : आगे तशरीफ़ ले चलिये (मज़ीद मनाज़िर दिखाने के बा'द) फ़िरिश्तों ने अ़र्ज़ की, कि पहला शख़्स जो आप صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने देखा येह वोह था जिस ने कुरआन पढ़ा फिर उस को छोड़ दिया था और फ़र्ज़ नमाज़ों के वक़्त सो जाता था इस के साथ येह बरताव क़ियामत तक होगा। (بخاری،4/425،حدیث:7047ملخصاً)

मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़ता या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़िल्मों की 2000 V.C.Ds तोड़ दीं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नमाज़ों की आ़दत बनाने, सुन्नतें अपनाने, नेकियों की ख़स्लत पाने और गुनाहों की नुहूसत से पीछा छुड़ाने के लिये दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता हो जाइये ! आइये ! आप की तरग़ीब व तहरीस के लिये एक मदनी बहार सुनाऊं चुनान्चे एक इस्लामी भाई के मक्तूब का ख़ुलासा है : दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल में आने से क़ब्ल, वोह नेकियों से कोसों दूर गुनाहों की वादियों में महसूर (या'नी क़ैद) थे, ख़्वाहिशाते नफ़्सानी की तक्मील गोया उन का मक़्सदे हयात बन चुका था। फ़ोहश फ़िल्में ड्रामे देखने के साथ साथ तरह़ तरह़ की दीगर बुराइयों की नुहूसतों का भी शिकार था। उन की नेकियों से हद दरजा ग़फ़्लत और फ़िल्मों ड्रामों से जुनून की हद तक महब्बत का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि घर से उन्हें जो माहाना एक हज़ार रुपै जेब ख़र्च मिलता था उन से नित नई फ़िल्मों और ड्रामों की V.C.Ds ख़रीद कर लाते हत्ता कि उन के पास दो हज़ार (2000) से ज़ाइद वीसीडीज़ जम्अ़ हो चुकी थीं ! اَلْحَمْدُلِلّٰه उन की क़िस्मत में नेक हिदायत लिखी थी जिस की सूरत कुछ यूं बनी कि एक दिन एक आ़शिक़े रसूल सब्ज़ सब्ज़ इमामा शरीफ़ का ताज सजाए उन के पास तशरीफ़ लाए और इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए उन्हें फ़िक्रे आख़िरत से मुतअ़ल्लिक़ कुछ इस तरह़ नेकी की दा'वत दी कि ख़ौफ़े ख़ुदा उन की रगो पै में सरायत करता चला गया, बुरी आ़दात व मुफ़्सिद ख़यालात की इमारत मुतज़ल्ज़ल हो गई, उस आ़शिक़े

रसूल के हुस्ने अख़्लाक़ और इन्फ़िरादी कोशिश की बरकत से वोह दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में हाज़िर हो गए। वहां होने वाले सुन्नतों भरे बयान ने उन के इस्यां शिआ़र दिल को तब्दील कर के रख दिया और आख़िर में मांगी जाने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ का दिल पर ऐसा असर हुवा कि घर आ कर उन्हों ने फ़िल्मों की तमाम V.C.Ds तोड़ फोड़ डालीं। दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्तगी की बरकत से उन्हों ने दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के सुन्नतों भरे बयानात की कैसिटें घर ला कर खुद भी सुनीं और घर वालों को भी सुनने के लिये दीं तो इन की बरकतों से اَلْحَمْدُلِلّٰه हमारा सारा घराना दीनी माहोल से वाबस्ता हो कर क़ादिरी रज़वी सिल्सिले में दाख़िल हो गया।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

नेक बन्दों की शानें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की बरकतों के क्या कहने ! इस में आ़शिक़ाने रसूल की सोहबतें, क़ुर्बतें और बरकतें नसीब होती हैं, इन में कई **अल्लाह** पाक के मक़्बूल बन्दे होते हैं जो अगर्चे पहचाने नहीं जाते मगर उन की बरकतों से बेड़ा पार हो जाता है। उ़लमा फ़रमाते हैं : जहां चालीस मुसल्मान सालेह़ (या'नी नेक मुसल्मान) जम्अ़ होते हैं उन में से एक वलिय्युल्लाह ज़रूर होता है। (फ़तावा रज़विय्या, 24/ 184, تیسیر شرح جامع صغیر، 1/312، تحت الحدیث:714) **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : बहुत से बिखरे हुए बालों, ग़ुबार आलूदा बदन वाले और दो पुराने कपड़ों वाले ऐसे होते हैं कि जिन की परवाह नहीं की जाती अगर वोह **अल्लाह** पाक पर

क़सम खा लें तो **अल्लाह** करीम उन की क़सम को पूरी फ़रमा देता है और **बराअ बिन मालिक** (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) उन्हीं लोगों में से हैं। (ترمذی، 5/460، حدیث:3880)

अपने अच्छे अच्छे बन्दों के तुफ़ैल ऐ किब्रिया मुझ निकम्मे और बुरे बन्दे को भी अच्छा बना

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

हज़रते बराअ बिन मालिक की क़बूलिय्यते दुआ की हिकायत

मज़्कूरा हदीसे पाक के रावी ने सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस फ़रमाने आलीशान के नतीजे में एक ईमान अफ़रोज़ हिकायत बयान फ़रमाई है, आप भी सुनिये और ईमान ताज़ा कीजिये चुनान्चे रावी कहते हैं : एक मर्तबा मुसल्मानों का कुफ़्फ़ार से आमना सामना हुवा तो कुफ़्फ़ार ने मुसल्मानों को सख़्त नुक़्सान पहुंचाया। तो मुसल्मानों ने जम्अ हो कर इन से गुज़ारिश की : **ऐ बराअ** رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ! अपने रब की क़सम दे कर फ़त्ह की दुआ मांगिये ! उन्हों ने अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** पाक ! मैं तुझ को तेरी ही क़सम दे कर दुआ करता हूं कि हमें कुफ़्फ़ार पर ग़लबा अ़ता फ़रमा और मुझे अपने नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास पहुंचा दे (या'नी शहादत अ़ता फ़रमा दे)। फ़ौरन ही आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की दुआ मक़्बूल हो गई और मुसल्मानों को फ़त्ह नसीब हुई और उसी लड़ाई में हज़रते बराअ बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ **शहीद** हो गए। (مستدرک للحاکم، 4/340، حدیث:5325)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो।

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

चाहें तो इशारों से अपने काया ही पलट दें दुन्या की
येह शान है ख़िदमत गारों की सरकार का आ़लम क्या होगा !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

जादू

से बचने का वज़ीफ़ा

"یَا مُحْیِیُ یَا مُمِیْتُ" रोज़ाना 7 बार पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लिया करें, اِنْ شَآءَاللّٰه जादू असर नहीं करेगा।

(40 रूहानी इलाज मअ़ तिब्बी इलाज, स. 8)